E Learning Study Material
By Prof YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE ARA
VKS UNIVERSITY ARA BIHAR
BA Part 1st Economics Hons
Paper 1st

Other Criticisms of the Concept of Consumers Surplus

उपभोक्ता की बचत की धारणा की अन्य आलोचनाएँ

5 उपभोक्ताओं की आय रुचि फैशन आदि में अन्तर होता है इस सिद्धान्त की यह मान्यता है कि उपभोक्ता की आय रुचि फैशन आदि में अन्तर नहीं होना चाहिए। लेकिन उपभोक्ताओं में आय रुचि फैशन आदि में अन्तर होता है जिसके कारण वे एक ही वस्तु के लिए अलग अलग मूल्य देने को तैयार रहते हैं ऐसी स्थिति में एक ही वस्तु के लिए उपभोक्ता की बचत भिन्न भिन्न होगी जिसकी सही माप कठिन है।

6 अनिवार्य तथा विलासिता की वस्तुओं के सम्बन्ध में उपभोक्ता की बचत को मापना

टॉसिग (Taussig) का विचार है कि अनिवार्यताओं (necessaries) तथा विलासिता (Luxuries) के सम्बन्ध में उपभोक्ता की बचत मापना कठिन है क्योंकि अनिवार्य वस्तुएं हमारे जीवन के लिए इतनी आवश्यक होती है कि उनके लिए उपभोक्ता कुछ भी मूल्य देने को तैयार होगा। उदाहरण के लिए, रेगिस्तान में तड़पता हुआ एक व्यक्ति एक ग्लास पानी के लिए कितना मूल्य देने को तैयार होगा, यह कहना कठिन है। अतः ऐसी अवस्था में उपभोक्ता की बचत को सही माप नहीं की जा सकती है।

(7) उपभोक्ता की कुल खरीद को ध्यान में रखते हुए उपभोक्ता की बचत शून्य होती है — उलिसी गोबी (Ulisse Gobbi) ने कहा है कि यदि हम उपभोक्ता की कुल खरीद (Totality of Purchases) को ध्यान में रखे तो उपभोक्ता की बचत शून्य के बराबर होगी। यदि उपभोक्ता को एक वस्तु के क्रम से बचत प्राप्त होती है तो वह उसे दूसरी वस्तु पर खर्च करना चाहता है। यदि दूसरी वस्तु के क्रम से भी उसे बचत प्राप्त हो तो वह उसे तीसरी वस्तु पर खर्च करेगा और यह क्रम तब तक चलता रहेगा जबतक उपभोक्ता की कुल खरीद को ध्यान में रखते हुए उपभोक्ता की बचत शून्य न हो जाय।

8. किसी वस्तु की अतिरिक्त इकाइयों की खरीद के साथ-साथ पिछली इकाइयों की उपयोगिता घटती जाती है। उदाहरण के लिए यदि हमारे पास एक कमीज है तो उसकी उपयोगिता हमारे लिए अधिक होगी

लेकिन जब दूसरी कमीज खरीद लेते हैं तो पहली कमीज की उपयोगिता कमीज की उपयोगिता हमारे लिए कम हो जाती है। ऐसी परिस्थिति में उपभोक्ता की बचत की माप नहीं की जा सकती है।

9. उपभोक्ता की बचत की धारणा काल्पनिक एवं भ्रामक है — उपभोक्ता की बचत की धारणा की आलोचना करते हुए प्रो० निकोलसन (Nicholson) ने यहाँ तक कहा है कि यह काल्पनिक एवं भ्रामक है। उनका कहना है कि यह विचार कहां तक सही है कि इंगलैण्ड में 100 पौण्ड वार्षिक आय की उपयोगिता मध्य अफ्रिका में 1000 पौण्ड वार्षिक आय के बराबर है? लेकिन प्रो० मार्शल ने इसका उत्तर देते हुए कहा है कि उपभोक्ता की बचत का आकलन दो स्थानों के बीच जीवन स्तर की तुलना करते में किया जा सकता है। उनके अनुसार यह कहना सही है कि 100 पौण्ड से जो सुख-सुविधा इंगलैण्ड में मिल जायेगी उसी के लिए मध्य अफ्रिका में 1000 पौण्ड खर्च करने होंगे।

इस प्रकार उपभोक्ता की बचत के सिद्धान्त के विरुद्ध अनेक आलोचनाएं की गयी हैं। वास्तव में ये आलोचनाएं मुख्यतः उपभोक्ता की बचत की माप की कठिनाइयों को लेकर है। सैद्धान्तिक रूप से उपभोक्ता की बचत की धारणा सही है, भले ही उसकी माप में व्यवहारिक कठिनाइयां हों इसका व्यवहारिक महत्व भी है। लेकिन सैम्युलसन (Samuelson) ने कहा है- उपभोक्ता की बचत का केवल सैद्धान्तिक महत्व रह गया है तथा गणितीय पहेली के रूप में इसका आकर्षण सीमित है। आधुनिक मूर्धन्य अर्थशास्त्री उपभोक्ता की बचत को नीची तटस्थता की वक्र रेखा से ऊंची तटस्थता की वक्र रेखा की ओर प्रगति का सूचक मानते हैं।